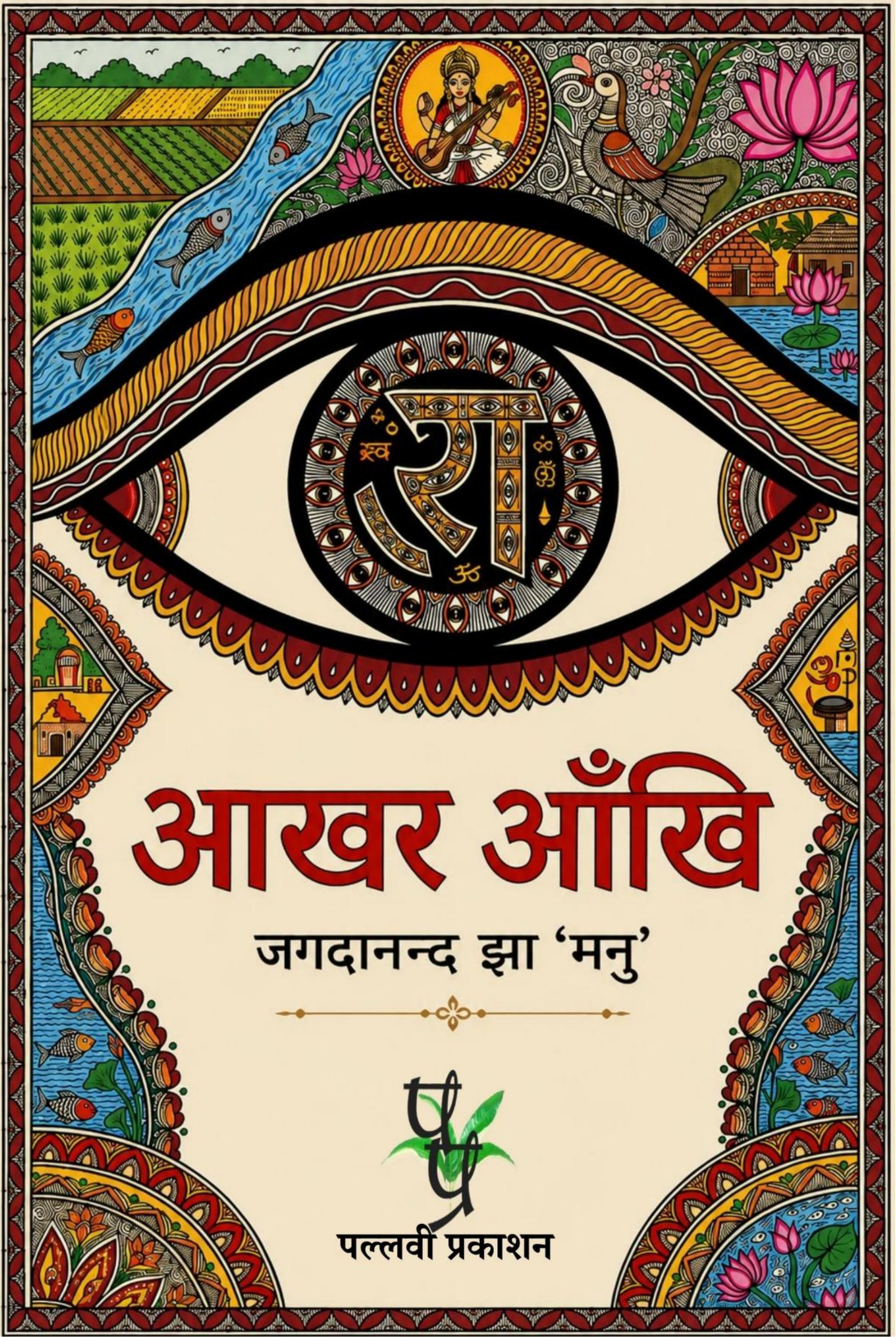
आखर आँखि
जगदानन्द झा 'मनु'
पल्लवी प्रकाशन

आखर आँखि

(हाइकू संग्रह)

आखर आँखि

(हाइकू संग्रह)

जगदानन्द झा 'मनु'

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

AKHAR AAINKH

A Maithili Haiku Collection by Shri Jagdanand Jha 'Manu'

Akhar Aainkh is a Maithili haiku collection by Shri Jagdanand Jha 'Manu', published in 2026 by Pallavi Prakashan. The book brings the brevity of the haiku form into the living idiom of Mithila, where a few syllables carry devotion, memory, nature, social awareness, and intimate human emotion. The poems range from invocations to Saraswati, Durga, Shiva, Krishna, and folk deities to the shifting moods of winter, rain, spring, and village life. Fields, rivers, ponds, courtyards, festivals, hunger, migration, parental affection, sibling bonds, love, marriage, and the moral tensions of contemporary society all find a place in these concise compositions.

The title itself reflects the poet's belief in words as "eyes" that perceive both the outer world and inner truth. The collection's strength lies in its plain language and emotional immediacy: a single image often unfolds into a broader human insight. Rather than mechanically imitating haiku, the poet adapts the form to Maithili sensibility, drawing on local imagery, rural speech, and cultural memory.

Akhar Aainkh thus emerges as a compact poetic record of faith, folk life, affection, and a society in transition.

Published by: Pallavi Prakashan
Tulsi Bhawan, Nehru Marg, Ward no. 06, Nirmali, District: Supaul, Bihar: 847452

First Edition: 2026
ISBN: 978-93-48865-05-2
Price: 299/-
Copyright: © Author (Shri Jagdanand Jha 'Manu')

Printed by: Manav Art (Pallavi Prakashan)
Typesetting: Dr. Umesh Mandal, umeshberma@gmail.com
Cover Design: Mrs. Poonam Mandal, Nirmali, Supaul, Bihar- 847452

Website: http://pallavipublication.blogspot.com
Email: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
Mobile: +91 99316 54742, +91 62006 35563
Font Source: Google Fonts

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, distributed, transmitted, adapted, paraphrased, stored in a retrieval system, or processed in any form or by any means, including electronic, mechanical, digital, or artificial intelligence systems, without the prior written permission of the copyright holder or the publisher.

समर्पण

पूज्य बाबूजी स्वर्गीय राज कुमार झा जीक पावन स्मृतिमे

अहाँक शिक्षा, संस्कार आ आशीर्वादक प्रतिफल थीक आइ हम आ ई पोथी

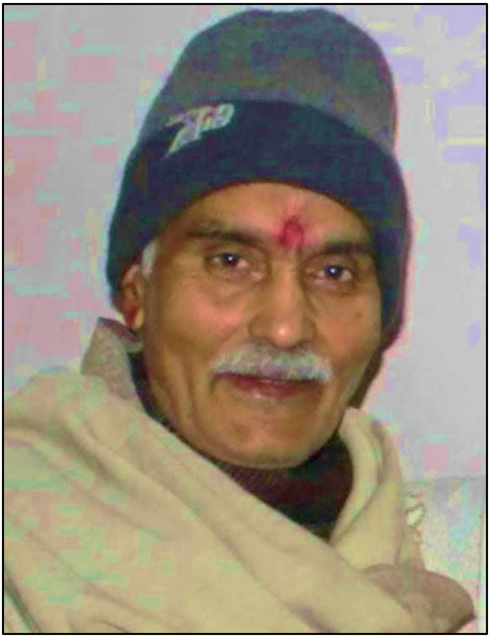

गेलाक बादो

बाबूजीक सिनेह

भेट रहल

दू आखर

प्रणाम। संग-संग हृदयसँ धन्यवाद जे अपने एहि संग्रहकेँ पढ़ि रहल छी। कोनो लेखक लेल ई अत्यन्त सुखद क्षण होइत अछि, जखन ओकर मनक भाव आखरक रूपमे पाठकक हाथ धरि पहुँचैत अछि। "आखर आँखि" एहने एक विनम्र प्रयास अछि।

जेना अपने बुझैत छी, 'आखर' माने अक्षर आ 'आँखि' मनुष्यक शरीरक छोट अंग भेलो बाद अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग थिक। आँखि चुपचाप आ मौन रहैत अछि, मुदा ओ दुनियाँक नीक-बेजए, इजोत-अन्हार, सुख-दुख, सौन्दर्य-विरूपता सभ किछु देखैत रहैत अछि आ मनुष्यक चेतनाकेँ निरन्तर सजग करैत अछि। तेनाहिते "आखर आँखि"मे परोसल गेल हाइकू अपन आकारमे भलेँ छोट अछि, मुदा आँखि जकाँ अपना भीतर बहुत किछु सहेजने अछि। ई छोट-छोट पाँति पाठकक चेतनाकेँ स्पर्श करबाक सामर्थ्य रखैत अछि।

हाइकू कविताक शायद सभसँ छोट रूप अछि, मुदा छोट होयब एकर सीमा नहि, बल्कि एकर शक्ति अछि। जइ भावकेँ नमहर कवितामे कहल जा सकैत अछि, ओहि भावक संकेत हाइकू कतेको बेर मात्र तीन पाँतिमे दऽ दैत अछि। हाइकू पाठकक मनमे दृश्य बनबैत अछि, भाव जगबैत अछि, आ कतेको बेर मौन प्रश्न सेहो छोड़ि दैत अछि। हम एहि प्रयासमे कतेक सफल भेल छी, एकर निर्णय अपने लोकनि ई पोथी पढ़लाक बाद करब। अहाँक निर्णय हमरा स्वीकार्य रहत, किएक तँ पाठकक मनहि कोनो रचनाक वास्तविक कसौटी होइत अछि।

हमरा लेल हाइकू इन्द्रधनुष जकाँ सतरंगी झिलमिल करैत प्रकृतिक बिखरल रंग अछि। दोसर दिस ई आकाशगंगाक शांत चित्रकारी सेहो अछि, जे

कोनो साधकक मनमे बसि ओकरा अनन्त साधना लेल प्रेरित करैत अछि। हाइकूमे क्षणक पकड़ अछि, मुदा ओ क्षण मात्र क्षण नहि रहि जाइत अछि। ओ जीवनक अनुभव, प्रकृतिक रहस्य, मनुष्यक करुणा, प्रेमक पीड़ा, समाजक विडम्बना आ समयक संकेत बनि जाइत अछि। अही कारण हाइकू छोट आकारमे सेहो व्यापक अनुभूतिक काव्य बनि उठैत अछि।

हाइकू मूलतः जापानी काव्य-विधा अछि। एकर जन्म, पालन-पोषण आ विकास जापानमे, जापानी संस्कृति आ जापानी माटि-पानिक भीतर भेल। सत्रहवीं शताब्दीक मध्य भागमे हाइकूकेँ स्वतंत्र काव्य-विधाक रूपमे प्रतिष्ठित करबामे मात्सुओ बाशोकेँ सराहनीय योगदान रहल, जे सदिखन स्मरणीय रहत। हाइकू अपन सहजता, संक्षिप्तता आ भाव-सघनताक कारण जापानसँ निकलि अनेक भाषामे पहुँचल। आइ मैथिलीमे सेहो हाइकू खूब लिखल जा रहल अछि। ई मैथिली भाषाक रचनात्मक सामर्थ्यक प्रमाण अछि जे ओ बाहरी काव्य-विधाकेँ अपन लोक-संवेदना, अपन बोली-बानी, अपन गाम-घर आ अपन सांस्कृतिक स्मृतिसँ जोड़ि सकैत अछि।

हाइकू कविताक अत्यन्त लघु रूप अछि, मुदा एकर रचना-विधान निश्चित अछि। ई कुल तीन पाँतिमे लिखल जाइत अछि। एकर वार्णिक संरचना पाँच-सात-पाँच अछि, अर्थात पहिल आ तेसर पाँतिमे पाँच-पाँच वर्ण आ दोसर पाँतिमे सात वर्ण होइत अछि। वर्ण-गणनामे संयुक्ताक्षरकेँ एक वर्ण मानल जाइत अछि। उदाहरणस्वरूप “जगदानन्द”मे पाँच वर्ण अछि। हाइकूमे तुकबन्दी अथवा परम्परागत छन्दक आग्रह नहि रहैत अछि। विराम-चिह्नक प्रयोग सेहो अनिवार्य नहि मानल जाइत अछि, मुदा तीन पाँति आ पाँच-सात-पाँच वर्ण-विन्यासक अनुशासन महत्त्वपूर्ण अछि।

देखबामे हाइकू बहुत छोट लगैत अछि, मुदा एकरा लिखब सहज नहि अछि। किएक तँ एतेक कम आखरमे भाव, दृश्य, संकेत आ पूर्णता सभकेँ सम्हारब पड़ैत अछि। हाइकू लिखैत समय शब्द-चयनपर विशेष ध्यान देबाक आवश्यकता होइत अछि। एकटा अनुपयुक्त शब्द पूरा बिम्बकेँ कमजोर कऽ सकैत अछि, आ एकटा सही शब्द पूरा हाइकूकेँ उजाससँ भरि सकैत अछि। जँ हाइकू पढ़लाक बाद पाठकक मानस-पटलपर कोनो दृश्य उपस्थित हो, कोनो

भाव जगि उठए, वा कोनो प्रश्न भीतर हलचल पैदा करए, तँ ओ हाइकू अपन उद्देश्यक निकट पहुँचैत अछि।

पूर्वमे हाइकूक मुख्य विषय प्रकृति आ मौसम मानल जाइत छल। फूल, पात, पवन, वर्षा, हिम, नदी, चान, तारा आ ऋतुक परिवर्तन हाइकूक प्रिय विषय रहल। मुदा आइ एकर विषय-क्षेत्र बहुत विस्तृत भऽ गेल अछि। आब मानव-प्रवृत्ति, ईश्वर-महिमा, लोकजीवन, परिवार, प्रेम, पीड़ा, विस्थापन, सामाजिक विडम्बना, आर्थिक विषमता, गामक बदलैत रूप, माय-बाबूक स्नेह, भाय-बहिनक सम्बन्ध, स्त्रीक मन आ मनुष्यक आन्तरिक संघर्ष सभ हाइकूमे स्थान पाबि रहल अछि। "आखर आँखि"मे हम अपन सीमित सामर्थ्य अनुसार अही विविध जीवन-अनुभवकेँ छोट-छोट आखरमे बान्हबाक प्रयास केने छी।

"आखर आँखि"मे परोसल गेल आखर मूलतः काव्यात्मक कल्पना, अनुभव आ संवेदनासँ उपजल अछि। एकर कोनो जीवित अथवा मृत व्यक्तिसँ प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहि अछि। जँ कोनो आखर, प्रसंग वा भावसँ किनको कोनो प्रकारक समानता प्रतीत होइत छनि, तँ ओ मात्र संयोग मानल जाए। हमर उद्देश्य किनको मन दुखेबाक नहि, बल्कि जीवनक विविध रूपकेँ भावक स्तरपर देखबाक अछि। तैयो जँ कोनो पाठकक मनकेँ कोनो ठेस पहुँचैत हो, तँ हम क्षमाक पात्र छी। अपनेसँ विनम्र निवेदन अछि जे हमर जे आखर अपनेक हृदयकेँ व्यथित केने हो, ओकरा अपन उदार हृदयसँ बाहर निकालि हमरा क्षमा कऽ देब।

हम हुनक सभक प्रति हृदयसँ आभार व्यक्त करैत छी, जिनक कोनो ने कोनो रूपमे हमरा एहि पोथीकेँ लिखबाक प्रेरणा, मार्गदर्शन, ज्ञान, सहयोग आ भरोसा भेटल। ई संग्रह केवल हमर निजी प्रयास नहि, बल्कि ओहि सभ स्नेह, विश्वास आ आशीर्वादक परिणाम अछि जे हमरा समय-समयपर भेटैत रहल। अपने सभ पाठकसँ सेहो हमर अनुरोध अछि जे हमरा सन अबोध साधकपर सहानुभूति रखैत अपन आशीर्वाद आ शुभकामना दैत रहब। अहाँक स्नेह, आलोचना आ मार्गदर्शन हमरा आगूक साधना लेल बल देत।

अन्ततः "आखर आँखि" केँ हम केवल हाइकू-संग्रह रूपमे नहि, बल्कि जीवनकेँ छोट-छोट क्षणमे देखबाक एक विनम्र साधना रूपमे अपने सभक समक्ष

प्रस्तुत कए रहल छी। मनुष्यक जीवन अनेक दृश्य, सम्बन्ध, पीड़ा, आनन्द आ मौन अनुभूतिसँ निर्मित होइत अछि। कतेको बात एहेन होइत अछि जे बहुत कहलाक बादो अधूरी रहि जाइत अछि, आ कतेको एहेन जे दू-तीन आखरमे सीधे हृदय धरि पहुँचि जाइत अछि। एहि संग्रहक प्रत्येक हाइकू ओहि सूक्ष्म अनुभूतिक खोज अछि। जँ एहि पोथीक कोनो पाँति अपनेक मनमे बिसरल दृश्य जगाबए, कोनो अपन लोकक स्मृति ताजा करए, कोनो सामाजिक प्रश्नपर सोचबाक लेल प्रेरित करए, वा जीवनक प्रति करुणा, स्नेह आ सजगता बढ़ाबए, तँ हम अपन ई प्रयास सफल मानब। अपनेक स्नेह, सहृदयता आ आलोचनात्मक दृष्टि एहि संग्रहक वास्तविक सम्पदा होएत।

अपनेक-

जगदानन्द झा 'मनु'

मो. +91 92124 61006

अनुक्रम

१. भक्ति, १- ५८
२. जाड़, ५९-६५
३. वर्षा, ६६-८६
४. बसंत, ८७-९४
५. फगुआ/ होली, ९५-११०
६. गर्मी, सुर्य/ सुरूज, १११-११८
७. मेघ/ आकाश, ११९-१२१
८. धरती, १२२-१२४
९. सागर, १२५-१२९
१०. नदी/ धार, १३०-१३७
११. गाम, १३८-१९६
१२. यादि/याद १९७-२००
१३. आखर, २०१-२०७
१४. माय/माँ, २०८-२२३
१५. माय बाबू, २२४-२२७
१६. बाबूजी, २२८-२४६
१७. भाइ/बहिन, राखी/रक्षाबंधन, २४७-२६१
१८. बेटी २६२-२६५
१९. प्रेम, २६६-३२४
२०. विरह, ३२५-३६८

२१. घर/परिवार, ३६९-४१७

२२. मानव प्रवृत्त/संवेदना, ४१८ -५२६

२३. तिलासंक्राति, ५२७-५३०

२४. बाल मन, ५३१-५३५

२५. शराब/ताड़ी, ५३६-५४०

२६. नेता/राजनीति, ५४१-५७४

२७. वृद्धावस्था, ५७५-५८४

२८. मृत्यु, ५८५-६००

१
आँखि दियौ माँ
हमरो आखरकेँ
सत्य देखए

२
वीणा धारिणी
कमल विराजनी
बुद्धि दिअ माँ

३
हे माँ सारदे
हमरो ज्ञान दिअ
हम अज्ञानी

४
महाकालिका
हमर कुल देवी
कल्याण करु

५
हे महाकाली
शरण एलौं हम
रक्षा करु माँ

६
संग जखन
मैयाक आशीर्वाद
तँ डर किए

७

गोर लगै छी

दुनू कऽल जोड़ै छी

हे जगदंबा

८

जाएत कोना

माँ अहाँकेँ छोड़ि कऽ

अहाँक बेटा

९

कनैए बेटा

मैया कोना सुतती

जागू हे अम्बे

१०

भक्ति नै जानी

नै जानी पूजा विधि

तोरा जानी माँ

११

कोना सहबै

मैया एतेक दुख

दूर करु ने

१२

हे माँ भवानी

किएक बिसरलौं

जग कल्याणी

१३

एतेक दिअ
जे हम बाँटि सकी
अहाँक कृपा

१४

ललका फूल
तोड़ि अनलौं मैया
करु स्वीकार

१५

भेलै सिंगार
मैयाक अदभुत
अरहुलसँ

१६

कपट मोने
नहि मैया भेटती
बुझल करु

१७

दुखक नदी
कोना कऽ हेतै पार
देखू हे मैया

१८

हमर साँस
तोहर देल मैया
बिसरल छी

१९
हे भोले बाबा
सुधि हमरो लिअ
ओधर दानी

२०
कमरथुआ
सजल निहाल छै
बाबा नगरी

२१
जगदीश्वर
हे प्रभु कृपा करु
शरण लिअ

२२
भोग लगाबू
गरीबक नबेद
हे भगवान

२३
कष्ट हरु हे
पिता परमेश्वर
आस अहींक

२४
राम नामसँ
सभ किछु होएत
भरोसा करु

२५

सगरो हल्ला
पाथर जीबि गेलै
रामक स्पर्शे

२६

राधा रमण
जगत केर स्वामी
कतय अहाँ

२७

कृष्ण हमर
किए बिसरने छी
सुनू पुकार

२८

आबि कऽ प्रभु
भक्तक कुटियामे
दर्शन दियौ

२९

यशोदा मैया
तोहर बलकबा
तंग करैए

३०

बाल गोपाल
मोनक मंदिरमे
आबि बिराजु

३१
लड्डू गोपाल
लड्डू लेने हाथमे
मन मोहना

३२
हरे गोविंद
कतय गेलौं कृष्ण
दर्शन दिअ

३३
सिंह वाहिनी
असुर संहारणी
माय हमर

३४
जगदाधर
माय बाबू सभक
पार्वती शिव

३५
के नै जनैए
शिव केर महिमा
सबहक ओ

३६
भक्तक हेतु
बड़ बड़ टांडब
केलन्हि शिव

३७
हे महादेव
हमर हृदयमे
निवास करु

३८
शिव एथिन
एक दिन हमरो
पुकारपर

३९
शिवरात्रिक
पावन अवसर
आँखि जुड़ल

४०
हे गंगाधर
भक्तक कष्ट केर
संहार करु

४१
सब होएत
भवसागर पार
कृष्ण नामसँ

४२
कृपा सदति
बना कय राखब
हे भगवान

४३
वृंदावनके
कन-कनमे कृष्ण
वास करैत

४४
नंदगाममे
सबतरि देवता
गोपीभेषमे

४५
निधिवनमे
गोपाल गोपी संग
रास रचैत

४६
धर्मक संगे
सगरो छथि कृष्ण
कुरूक्षेत्रमे

४७
नारीमे साड़ी
की साड़ीमे नारी छै
जानथि कृष्ण

४८
मथुरा एलौं
कृष्णमय भेलहुँ
अहींक कृपा

४९

राखब कृपा

सभपर माधव

सुनूँ विनती

५०

बसि जाउ हे

हमर राधा रानी

मन मनमे

५१

रामशरण

राम शरण आबि

रामक भेला

५२

चान सूरूज

लटकल कोना क

जँ ईश्वर नै

५३

सिंगार केलौं

प्रभु अहाँ सृष्टिक

अंग-अंगकेँ

५४

करुणानिधि

किएक चुप्प अहाँ

ई दिन देख

५५

एलौं शरण
अहाँ शरणागत
शरण लिअ

५६

हे सलहेश
लोकक करेजामे
वास अहाँक

५७

चंचल मोन
हरिकेँ बिसरल
जगमे आबि

५८

देख मैयाक
अदभुत सिंगार
मोन जुड़ेलै

५९

घूरक आगि
प्राण बचबै छैक
जाड़ मासमे

६०

कतेक भारी
गरीब गुरबाक
जाड़क राति

६१
काँपैत देह
खटखटाति दाँत
घूर तापैत

६२
घूरक धाह
मरबसँ पहिने
प्राण देलक

६३
गरीब संगे
ठिठुरैत सुरुज
पूसक भोरे

६४
माघक भोर
कटोरी लेने ठाढ़
नव आसमे

६५
पुषक जाड़
शोणित जमेलकै
गरीबेटाकेँ

६६
ई सतरंगा
श्रृंगार के केलक
मेघक आड़

६७
वर्षाऋतुक
शांत सौम्य अकाश
मोन जीतैत

६८
पिया वियोगे
रिमझिम बदरा
नोर बहाबै

६९
वर्षा अबिते
धरती हरियर
मनमोहक

७०
मेघक प्रेम
वर्षा बनि आएल
धरतीपर

७१
बारीमे उड़ि
केकरा तकैत छै
भगजोगनी

७२
साउन संगे
आबि रहल अछि
सुन्नर यादि

७३

मेघ गर्जल
बिलोका चमकल
साउन एलै

७४

सुर तानसँ
टर टर बजै छै
बारीमे बेंग

७५

मोन जुड़ेलै
हरियर कंचन
पानि देखि क

७६

ओरियानीक
झहरैत पनिसँ
डोलल मोन

७७

चतरल छै
मिथिलाक पानिमे
माछ मखान

७८

वर्षाक संगे
तर तर पाथर
चाँदी पथार

७९

बिच भादव

जलमग्न धरती

चहुदिस छै

८०

वर्षाक बूँद

पुरनि पात पर

मोती लगैत

८१

विरही बेंग

टर टर करैत

वर्षाक राति

८२

मेघ गर्जैत

पियासल धरती

तृप्तक आस

८३

चौठक चान

मेघक घोघ हटा

बिहुसि गेली

८४

अन्हार मेघ

आस नेने आयल

धान होयत

८५

धानक खेत

कादो सनल पैर

कोरामे नेना

८६

जोतल खेत

परता रहि गेल

बिन वर्षाकेँ

८७

फूल हँसलै

गाछ सभ झुमलै

बसंत संगे

८८

ऋतुराजक

माथपर सोभैत

पीयर पाग

८९

कोयली कूकै

गाछ बिरिछ नाचै

मधुमासमे

९०

फूल झुमै छै

बसंतक खुशीमे

मोर नचै छै

९१

एलै बसंत

मोनक सभ रंग

हर्षित भेलै

९२

मोनमे लाबा

आगम बसंतक

पिया मिलन

९३

पिया विदेश

बौरायल बसात

मोन अधीर

९४

प्रेमक बूँद

टप टप टपकै

मधुमासमे

९५

वरसानाक

गलीमे राधा कृष्ण

खेलैत होरी

९६

राधाके हाथ

रंगक पिचकारी

वरसानामे

९७
रास रचैया
गोपी संग नाचैत
वृंदावनमे

९८
अबीर नुका
राधाके लगोलनि
छलिया कृष्ण

९९
श्यामकेँ कोना
श्याम रंग चढ़त
राधा उदास

१००
कृष्ण छीन कऽ
केलनि उपकार
होरीक रंग

१०१
मायाक कीच
मोन बड्ड लागल
धोयब कोना

१०२
धरतीपर
अबिते बसंतकेँ
बन झूमल

१०३

फागक हवा
माथपर चढ़ल
भाँगक निशा

१०४

फागुन संग
रंग अबीर एलै
गाबैत होरी

१०५

खेलब होरी
पिया रंगरसिया
संग हमर

१०६

मोन हर्षित
नित होरीक रंग
पियाक संग

१०७

एलाह घर
पियाजी रंगयले
खेलू की होरी

१०८

कोना खेलब
पिया नहि एलाह
होरीमे घर

१०९

पेटक आगि

सुन घर आँगन

केहन होरी

११०

फुचूक्का लेल

धिया पुता रूसल

गरीब बाप

१११

जेठक मास

बाँस खीचैत बाप

खाली पएरे

११२

भोरका रौद

सेरसो खेतपर

चानी लगैत

११३

जेठक भोरे

लाल आगि फेकैत

सूरूज देव

११४

गंगा नहा क

भोरे भोर सुरुज

चमैक गेला

१९५
साँझक सूर्य
लाल जोड़ा पहिन
कतय गेला

११६
रैबक छुट्टी
किएक नै होइ छै
सूर्य देवकेँ

११७
थाकल सूर्य
निचैनसँ सुतला
साँझ होइते

११८
भोरका सूर्य
आजुक लोक लेल
दुर्लभ छैक

११९
सेरसो जकाँ
थारीमे सजल छै
मेघक तारा

१२०
हँसै छै चान
मेघक अँगनामे
तारा नचै छै

१२१

मेघ सटने

माथ चान टिकुली

लाजसँ लाल

१२२

धरती केर

हरीयर आँचर

कते पावन

१२३

छनि कैश ई

सोन बालूक कण

मातृभूमिकेँ

१२४

कोसी कातकेँ

हरियर दुइब

सोहनगर

१२५

भेल पागल

हवा संग सागर

सुनामी बना

१२६

बाल सूरूज

सागर तटपर

होली खेलैत

१२७
अथाह पानि
हृदय पियासल
समुद्र कात

१२८
के बनबै छै
नुनगर पानिसँ
मीठका डाभ

१२९
कते अधीर
सागरसँ मिलन
हेतु छै नदी

१३०
पाप तारनि
हमर गंगा माय
धरती पर

१३१
गंगा नदी नै
ई धारा अमृतकेँ
बहैत अछि

१३२
मनमोहक
कल कल करैत
गंगाक धारा

१३३
केहन माया
उज्जर कारी धारा
संग बहैत

१३४
पापक भार
कमला मैया नहि
सहि सकली

१३५
कोंढ़ फाटल
जँ कमला माइके
तँ बाढ़ि एलै

१३६
कमला माइ
अन धन अनली
संगे अपन

१३७
धारक कात
घूमैत धिया-पुता
माछक लोभे

१३८
के कमलसँ
पोखरि सजेलकै
कलाकार के

१३९

फूलेलै बेली

हमर अँगनामे

कंचन जकाँ

१४०

चाँदी लगैए

आइर परहक

ओसक बूँद

१४१

पोखरि घाट

हरियर कजरी

लोभै मोनकेँ

१४२

गोल मटोल

कारी उज्जर भुल्ल

कुकुर बच्चा

१४३

नांगैर उठा

सरपट दौड़ैत

अबोध बाछी

१४४

खेतक आरि

सिकुड़ल जाइए

भूख नै बुझै

१४५

कऽल चलने

इनार डुबि गेल

माटिक तऽर

१४६

फाटल पैरे

आरिपर चलली

ढाकी नेने के

१४७

आमक गोपी

हरलक हमर

छनमे मोन

१४८

यादि अबैए

करीनक पटोनी

धान खेतमे

१४९

खूरपी ढ़ाकी

ल क काकी चलली

राज काजमे

१५०

खैनी चुना क

ठोरमे नुकोलनि

डाक्टर काका

१५१

दुराक घूर
आ दिल्लीक संसद
बहस एक्के

१५२

साँप घुमै छै
गामक घरे-घर
लोक कतय

१५३

पढ़ुवा काका
आरि छिलैत छथि
कालू खेतक

१५४

हर बहब
प्रदेश रहबसँ
बेसी बढ़ियाँ

१५५

छोटकी काकी
असगर घरमे
बेटा प्रदेश

१५६

गामक लोक
अपनत्व बुझै छै
सिटीक पाइ

१५७

गाम हमर
करेजमे बसल
ई के बुझतै

१५८

एखनो धरि
आम जामुन केरा
गाममे मुफ्त

१५९

बाँसक बीट
उपटल जाई छै
गाम गाममे

१६०

बाटमे कादो
की कादोमे बाट छै
कते गामक

१६१

गाम घुमलौं
गोजगरा रातिमे
मखान लेल

१६२

माछक मुड़ा
बासमतीक भात
जस भ गेल

१६३
अनकर घी
ककरो देखने की
बाटी भरि पी

१६४
जीयान भेलै
भोजक रसगुल्ला
खेत बिका क

१६५
गामक पानि
शहर केर दुध
एक्के सनक

१६६
गामक सेठ
पंजाबमे दिहाड़ी
भरल ट्रेन

१६७
बिन जीविका
सगरो गाम खाली
शासक फेल

१६८
मुर्गा जितल
हरा आलू झिमनी
भंसाघरके

१६९

भादोमे कादो
गाम गाम भेटत
खेतमे नहि

१७०

हथिया एने
किसानकेँ सुतने
बखाड़ी खाली

१७१

मरुवा रोटी
नून मरचाइमे
धान रोपाई

१७२

पिसल तास
चासक हरबाहा
बेड़ नै देखै

१७३

गामक हाट
लाई मुड़ही झिल्ली
हर्षित मोन

१७४

मालक घंटी
टनटन बजैत
लुप्त भ गेल

१७५
आजुक नेना
हऽर पालो बऽरद
नहि चिन्हतै

१७६
आगू जीलौं तँ
बिन कादो धानक
खेती देखबै

१७७
अहूँ गाममे
आइर छटनाइ
के कला छै की

१७८
गामक लोक
बेसाहसँ तंग भऽ
शहर गेल

१७९
शहरी हबा
गाम चलि आएल
बेसाह लेने

१८०
भोजक सुनि
जमाइन फकै छै
लोक भोरेसँ

१८१

पोखरि घाट

कतए बिला गेलै

गाम-गामसँ

१८२

माछ मखान

खेत पटौनी छलै

पोखरि बूते

१८३

गामक गाम

पानिमे डूबल छै

उबारत के

१८४

खेतक चास

कलमक निवास

नहि रहल

१८५

गीत गाबैत

घर घर झींगुर

कते विकास

१८६

दौनीक मेह

नहि गोला बड़द

गाममे आब

१८७
बाबीक गेने
नहि भोरे पराती
कियो गबैए

१८८
संगे ल गेल
हमर नानी दाई
ढेकी समांठ

१८९
पियरगर
माँछ भातक भोज
गाम-गाममे

१९०
कतय गेल
ढेकी समाठ संगे
भोरका तान

१९१
खेतक बीच
नव-नव आइर
बँटैत मोन

१९२
खालि दलान
सुन धर आँगन
परता खेत

१९३
गामक भोज
जन्म मरनपर
जीवन भरि

१९४
माँझ रातिमे
गरीबक झोपड़ी
सगरो चूबै

१९५
साँपक डरे
गाम घर छोड़ब
कहिया धरि

१९६
आम जामुन
कटा रहल अछि
नव विनाशे

१९७
यादि अबैए
नैहर केर सुख
सुतली राति

१९८
एखनो स्वाद
पनिगर सागक
मोन परैए

१९९

भूखल पेटे
खूब यादि अबैए
चीनीक रोल

२००

यादि अबैए
हमर साइकिल
दहेज बला

२०१

आखर आँखि
सुख दुख धेलक
पाँति-पाँतिमे

२०२

आखर संगे
जीयब सीखलहुँ
आखरे मीत

२०३

सीख नै पेलौं
जीवनक आखर
मरितो धरि

२०४

आखर सन
हमर करेजमे
के बसि गेल

२०५

प्रेम आखर
दुखे बहैत नोर
कियो पढ़त

२०६

आखर जनि
नहु नहु पढ़ू ने
मोन हमर

२०७

लिख दियौ ने
हमर मोनपर
प्रेम आखर

२०८

मेनाक बच्चा
भूखे मरणासन्न
माय जालमे

२०९

अमर कंठ
अमृत स्वर अछि
माय अहाँकेँ

२१०

मायक दर्द
दोसर बुझत के
नेना पोसैमे

२११
माँ रचैता छै
सभक जीवनकेँ
माँमे जीवन

२१२
अनमोल छै
माय केर आँचर
सभसँ बेसी

२१३
प्राण बनि कऽ
मायक हियामे छै
नेना बसल

२१४
हमरा लेल
माँ जरैत रहली
जीवन भरि

२१५
बोनि कय कऽ
पोसलनि चिलका
कहै केलेँ की

२१६
रचै छी आइ
किछु आरो कविता
मौन रहि कऽ

२१७

नेनामे माँकेँ

बिछान भीजेलकै

बूढ़मे आँखि

२१८

आइ बहुते

मोल तौल होइ छै

मायक संगे

२१९

सगरो मेला

बहुते भीड़ भाड़

माँ असगरे

२२०

नअ महीना

जे पेटमे रहल

बिसरि गेलै

२२१

कोरामे नेना

भुखे छल व्याकुल

चोर बनलौं

२२२

नून रोटी खा

ओ तँ पोसि लेलनि

पाँचों भांइकेँ

२२३
हे महामाय
एतेक अत्याचार
कोना सहै छी

२२४
मायक शौख
पिता केर सपना
जगिते खत्म

२२५
माय-बाबूक
मोजर नै कनिको
कनियाँ आगू

२२६
मायक हाथ
बापकेर संगति
भाग्यवानकेँ

२२७
बाबूक बात
माँकेँ लात बूझलौं
चालीस बाद

२२८
पाइ रहितो
भूखक दर्द पुछू
कोनो बापसँ

२२९
घमंड संगे
गर्व अछि हमरा
बाबूजीपर

२३०
हमरा लेल
कखनो नै थकला
हमर पिता

२३१
कोदारि पारि
बाबू केलनि खेती
हमरे लेल

२३२
सभ देलनि
कामधेनु बाबूजी
एक बाकमे

२३३
सभ कष्टके
बाबूजी हरलनि
साक्षात देव

२३४
गेलाक बादो
बाबूजीक सिनेह
भेट रहल

२३५
सुन्नर यादि
मोनमे बंद अछि
बाबूजी केर

२३६
जीबैत नहि
करेजसँ लगलौं
बाबूजी केर

२३७
बाबूजी लेल
कते मोन बेकल
आँखि झहरै

२३८
बाबूजीक ई
देहेटा रहिगेल
हमरा लग

२३९
जमा केने छी
बाबूजीक यादक
मधुर क्षण

२४०
दुख सुखकेँ
करेजामे नुकोने
बापक चुप्पी

२४१
दर्द सहितो
जे नहि कानि सके
ओ तँ बाप छै

२४२
लाखो खर्चा क
जे पुरान कुर्तामे
बेटीक बाप

२४३
जीवन भरि
नुकोलनि नोरकेँ
दर्द सहितो

२४४
ब्याहक खुशी
दूर होबैक दर्द
भरल आँखि

२४५
आइ बुझलौं
बेटी बिदाइ बाद
बापक दर्द

२४६
बुझब कोना
ई नेहक दरेग
बिछोह बिना

२४७

भाइक प्रेम
बहिनक सिनेह
दोसर नहि

२४८

कनिको नहि
बहिनक विदाइ
सहल गेल

२४९

संगे एलहुँ
छोड़ि कोना कऽ गेल
दोसर घर

२५०

मारि दे मुक्का
मुदा छोड़ि नहि जो
हे गै बहिन

२५१

हमर आंगी
लत्ता सबटा ल ले
नै जो बहिन

२५२

भैया अहाँक
रोज बाट देखै छी
आँखि निहारि

२५३
रक्षाबंधन
खाली गट्टा देख कऽ
नोर बहल

२५४
राखी पाबनि
बहिनक सिनेह
कना देलक

२५५
सभ राखीमे
छूछ गट्टा अपने
कानि क बान्ही

२५६
चिट्ठीमे एलै
बहिनक सिनेह
बड़भागीकेँ

२५७
बस एतबे
भगवतीसँ मांगी
खुस रह तूँ

२५८
हमरो साती
जुग जुग जियु यौ
भाइ हमर

२५९

राखी पावनि
भैया अयता गाम
सजल नैना

२६०

ई ताग नहि
हमर प्रेम भैया
यादि राखब

२६१

हे चंदा मामा
हमर माय हाथे
राखी बन्हा जो

२६२

बेटीक जन्म
भाग्यशाली घरमे
होइत छैक

२६३

हमर बेटी
हमर अभिमान
जीवन भरि

२६४

घरक लक्ष्मी
सुख शांति बढ़ेती
सम्हारि राखू

२६५

देह घरमे
करेजा सासुरमे
बीपी हेतै नै

२६६

तरका मोने
आइ काल्हि हमरा
ओ तकै छथि

२६७

मुँह पर छै
करेजाक सिनेह
मुस्की बनि कऽ

२६८

मोनमे बसि
हमर संग रहू
जनम भरि

२६९

जियल जे नै
प्रेम केर जीवन
ओ बिन प्राण

२७०

मोनक तार
अहुँकेँ पहुँचल
मानु नै मानु

२७१

हियाक तार
अहीं संग जूड़ल
ई मानि लिअ

२७२

कियो हमर
करेज छू लेलक
बिन कहने

२७३

प्रेमक रस
मोनमे फूटल छै
आनन्दे हम

२७४

काजर बनि
जँ अहाँक आँखिमे
बसितौँ हम

२७५

बिन माहुर
गालक तिलपर
हम मरलौं

२७६

कतेक राखू
एकटा करेजमे
अहाँक नाम

२७७

कतय छलौं
हियाक नेह अहाँ
एखनधरि

२७८

मन फूलल
कोहबर रांगल
पियाजी औता

२७९

मधुर गीत
गाबै हमर मोन
पिया अबिते

२८०

डेग नै उठै
पिया जखन आगू
मड़बापर

२८१

कोबर घर
पिया संगे रातिमे
मोन अधीर

२८२

रंग अहींक
गुलाब चोरेलक
दिव्य बरन

२८३
कीच कमल
जकाँ खिलल रुप
प्रीतक पुन्ज

२८४
मधुर ठोर
रसमय मोहनी
जान लेलक

२८५
छूलनि पिया
मुँह भेल गुलाबी
लाजे हमर

२८६
मोनक आरि
हुनक दर्शनसँ
टूटल किए

२८७
पीड़ा हरियो
हमर करेजक
मनमोहनी

२८८
करु इलाज
प्रेम रोग लागल
यौ पतिदेव

२८९

जरि रहल

हमर तन-मन

प्रेम आगिमे

२९०

नैनक बाण

ठोरक वाकपर

देवो घायल

२९१

प्रेममे अहाँ

माय बनि गेल छी

हम चिलका

२९२

कनियाँ व’र

रौदी दाही सुखल

पलंग तोड़े

२९३

हम हारलौं

तन मन अपन

पिया सिनेहे

२९४

नेबोक स्वाद

नै लगैए पियाजी

चाँच कराउ

२९५
अहाँक प्रेम
प्रभु केर प्रसाद
बनि भेटल

२९६
प्रेमक फल
हमर कोइखमे
जग आनन्द

२९७
लाली सेनुर
हमर पिया केर
आयु बढ़ेतै

२९८
हारलौं नहि
जीवनसँ कहियो
संगे अहाँक

२९९
कहेलौं आब
हुनकर प्रेममे
हम बताह

३००
दीप आ बाती
सिनेहक खातीर
संगे जरल

३०१
नै पजारब
प्रेमक आगि हम
अहाँक बिना

३०२
हम सचेत
मधुपान करब
डंक रहित

३०३
नव कनियाँ
भरि मोन खेसारी
सुतल व’र

३०४
खाली घरमे
मचानपर खीरा
सहब कोना

३०५
आगि मिझोने
भूख नहि मेटत
चाही संतुष्टि

३०६
शिथिल देह
कादोमे छप-छप
अतृप्त मोन

३०७

एक्के रंग छै

कारी गोर चाम ई

बत्ती बुतेने

३०८

आजुक प्रेम

मकैकेँ लाबा जँका

जट-पटसँ

३०९

नवकी काकी

काका संगे चलली

गामक हाट

३१०

लवड़ा व'र

फुसियाही कनियाँ

फरलै खूब

३११

करीया व'र

सरकारी नोकरी

गोर कनियाँ

३१२

गुलाब अहाँ

हम काँट रहितो

निबैह गेल

३१३

नारीक मोन

आ पुरुषक मौन

के बुझलक

३१४

नीक रहितो

कैंची सन बोलसँ

बड़ दुखी छी

३१५

सदिखन ओ

ठीके रहैत छथि

दोष ककरो

३१६

सेनुर मोले

बिन तिले बहै छी

जीवन भरि

३१७

प्रेमक रोग

बताह बनेलक

दुख सहलौं

३१८

दर्द हमर

दबि क रहि गेल

बीच सभामे

३१९

अहाँक प्रेमे

सिंगार फूल जकाँ

बाटपर छी

३२०

प्रेम केनाइ

आजुक समयमे

जान देनाइ

३२१

माहुर पेलौं

आब जुनि करब

नेह ककरो

३२२

आँखिक जोत

चलि गेल हमर

प्रेम तकैमे

३२३

प्रेम करब

प्रेम निबाहबमे

बड्ड अन्तर

३२४

एकटा नाम

करेजक पन्नासँ

नहि मिटलै

३२५

मैसेज केलौं

हृदय खोलि आइ

सिनेहीयाकेँ

३२६

फोन एलैये

भोरे पियाक आइ

ओ गाम एता

३२७

हम बेजान

बाट देख थकलौं

अहाँ एलौं नै

३२८

पुषक जाड़

बितत कोना राति

चलि आबू ने

३२९

मोन कनैए

नींद नहि अबैए

आबू यौ पिया

३३०

नै बुझलक

कियो हमर मोन

जिनगी भरि

३३१

मोनक तार
जुड़बसँ पहिने
टूइटे गेलै

३३२

हृदय जोड़ि
नहि सिखलौं हम
तोड़ैकेँ कला

३३३

उम्मीद किए
सभक बूते नहि
मोन बुझब

३३४

प्राणसँ बेसी
परवाह जीनक
ओ छोड़ि गेली

३३५

संग चललौं
बाटमे बिसरला
हाथ पकरि

३३६

पाइ नै अछि
सिनेहक मोले की
तेँ असगर

३३७
कुकुर पोसी
कियो प्रेम करत
ई नै मानी

३३८
गरीब जनि
हमर मोन तोरि
ओ हँसै छथि

३३९
प्रेममे धोखा
बहुते खेलौं हम
विश्वास केने

३४०
छलिया प्रेमी
संगे लेने चलै छै
सेनुर डिब्बी

३४१
नै बुझलनि
हमर प्रेम किए
निर्मोही पिया

३४२
देह हमर
ई प्राण पिया केर
हमरा लग

३४३

प्रेमक आगि

बारल करेजमे

निर्मोहीयाक

३४४

मोनक भाव

कागदपर नेने

प्रेमपत्रमे

३४५

सगर राति

मुँह नुका कानै छी

पियाक यादे

३४६

जीतक शर्त

हारब छै प्रेममे

बुझिते राजा

३४७

करेज खोलि

सुख दुख अपन

ककरा कहू

३४८

मोनक गप्प

कहियो नै सकलौं

प्रियतमसँ

३४९

प्रेमक गति

विरहिणीसँ पुछू

चीनीयो तीत

३५०

दूर साजन

प्रेम रोग लागल

जीयब कोना

३५१

नम्हर राति

नहि बीतरहल

पिया अछैते

३५२

नुकोने लाखो

करेजा केर दर्द

हम हँसै छी

३५३

बिन कहने

कहियो तँ बुझब

हमर मोन

३५४

बिन जोड़न

दही नै जनमतै

ठीके सोचलौं

३५५
बिन सोचने
जिनका हिया देलौं
ओ सौदागर

३५६
प्रेम पागल
पागल सभ प्रेमे
नीक अप्रेमे

३५७
पागल प्रेमी
दिन राति बाँचैत
प्रेमपत्रकेँ

३५८
चान सुरूज
दू बाटक पथिक
भेट नै भेल

३५९
बाँस कहैत
भरि पाँज जकैर
मोनक व्यथा

३६०
केकरा कहू
आब पोख भरि कऽ
हियाक गप्प

३६१
तकैत अछि
ई मोन सबतरि
नेहक स्वर

३६२
पिया विदेश
पियासल मोनकेँ
रांगब कोना

३६३
आँखिक कोर
सुखल नै हमर
पिया निर्मोही

३६४
ओषधि अहाँ
हमर हृदयकेँ
रूसलौं किए

३६५
हाथ छुबिते
अहाँक कमीजसँ
भीजि गेलहुँ

३६६
बेकल हिया
प्रियतमक यादि
दर्द उठल

३६७
रोसनाईसँ
हम नहि लिखलौं
मोनक दर्द

३६८
दू बूँद नोर
हमर सारापर
खसा देबै ने

३६९
सब सुनलै
ओल सनक बोल
घोघे तरसँ

३७०
सेल आ साला
दुनू तंग करै छै
ब्याहकेँ बाद

३७१
पति रहिते
बहु-देव पूजब
नव फैशन

३७२
पतिकेँ छोड़ि
सभकेँ पूजलक
ओ कोन व्रता

३७३
पतिव्रतासँ
व्रत हटा केहेन
पति पिटेला

३७४
व्रता आ पति
फैशनकेँ दौरमे
एक्के लाइने

३७५
मोन तोरैत
हुकूम चलबैत
रानी घरक

३७६
आदर संगे
जे मोन बुझलक
नीक स्पाउस

३७७
नै सुरक्षित
पुरुष राजमे स्त्री
कतौ बाहर

३७८
असुरक्षित
स्त्री राजमे पुरुष
घर घरमे

३७९

परिवारमे

अहाँकेँ शांति अछि

तँ स्वर्गमे छी

३८०

घरमे भेद

अशांत परिवार

नर्कक भोग

३८१

हम नै कम

जेए चूप्प रहब

मास्टरनी छी

३८२

मनुखपर

संगत आ रंगत

चैढ़ते छैक

३८३

आँखिक लाज

बेच कय खा गेल

आजुक लोक

३८४

लाबा छीटलौं

आंजुर भरि भरि

भेटल बूढ़े

३८५

कोबीक फूल

वेलेंटाइन दिन

पति देलनि

३८६

देहक घाव

समय भरि देतै

मोनक नहि

३८७

मोनक सीमा

खत्तम नहि हेतै

जा धरि जीव

३८८

बारीमे साग

दुरापर पाहुन

चाहै छै माछ

३८९

चुप्पी नीक छै

तहन हल्ला किए

सब जनै छै

३९०

परिवारमे

खटपट किएक

नाम खातिर

३९१

हम खुश छी

तेँ एखन कतेको

बड़ दुखि छै

३९२

डीहक मोह

पेटक आगि संगे

जरि गेल छै

३९३

नून तेलमे

गरीबक जीवन

ओझरायल

३९४

धन अभावे

परिवारोसँ भेल

बेनाम लोक

३९५

नूनक भाव

चाँदी चम्मच बला

कोना बुझतै

३९६

किछु सम्बन्ध

हम दू हमर दू

कारणे खत्म

३९७

माछक मूँड़ा
सभटा बँटिगेल
काँट बचल

३९८

भंसा घरमे
झोरगर तीमन
भात दाइल

३९९

एक्के घरमे
रहितो लोक सब
बड़ दूर छै

४००

कमाऊ पूत
दूधगर मालक
लातो नीमन

४०१

घरजमाई
आ गामक कुकुर
दुत्कारै लेल

४०२

पुतहु बौक
बेटी बज्जककैर
बड़ पसिन

४०३
घरक जोगी
मंत्र पढ़े कतबो
भागै नै भुत

४०४
लाड़ैन लाड़ि
सभकेँ सोधलनि
मीठ बाजि कँ

४०५
घोघे तअरे
डराबथि कनियाँ
कलियुगमे

४०६
खापरि धिपा
चेन जरेलनि ओ
संगे चलिते

४०७
नोर खसल
धरती गलि गेल
के बूझलक

४०८
लोभ खातिर
लोग संगे सगरो
एहि जगमे

४०९

भाइ भैयारी

सभ बीतल गप

पाइकेँ सोंझा

४१०

कऽलम खेत

आँगन खड़ीहान

सभ बटेलै

४११

घर अँगना

सगरो छै चमकै

भौजीकेँ एने

४१२

यशस्वी रहू

आँखि जुराएल

बौआकेँ देखि

४१३

भरोसा नहि

बचल आब कतौ

सहोदरोमे

४१४

टाका देवता

माय बाप छी टका

आइ सभक

४१५
पलाश जकाँ
सबतरि बारल
नीक भेने की

४१६
मेलामे सस्ता
घरमे महग छै
हिसाब केने

४१७
गृहस्थ भेषे
अहाँ ऋषि कोनो छी
हे महामना

४१८
बाहर ताकि
जीवन हारलहुँ
ओ तँ मनमे

४१९
नै अरजब
गरीब कहायब
हम्मर मोन

४२०
अपने मोने
एतेक विद्वान के
एहि जगमे

४२१

बिन तेलकेँ

लालटेन बारने

इजोत कोना

४२२

झहरल छी

बेजान नै अखनो

पल्लव एतै

४२३

लोक हमरा

करेज लगेलक

जेबी देख क’

४२४

पैसा खतम

सब अनचिंहार

बुझैत देरी

४२५

नोकरी गेल

असगर भ गेलौँ

खाली गाममे

४२६

चारि दिनक

अन्हरिया आएल

सब चिन्हलौं

४२७
सम्पति देख
लोक नोर पोछै छै
कलियुगमे

४२८
पघि जेठक
नै मर्यादा रहल
सभ्यता इहे

४२९
नोटक गंध
केलकै आकर्षित
बेटावलाकेँ

४३०
शिक्षा संस्कार
सरकारी नोकरी
लग छै फीका

४३१
नीक लगै छै
अनकर तीमन
भोजक अन्न

४३२
बिन सिखने
आगिसँ खेलबै तँ
हाथ पाकत

४३३
हारल मोन
आ मिझा गेल आगि
कोन काजक

४३४
कलम धार
मुरझायल अछि
टाका इजोते

४३५
पाइ फेक क
सब किछु भेटत
आज्ञा तँ करु

४३६
बड़ राक्षस
टेंगारी पिजा राखू
काज आएत

४३७
जग नापब
आब अप्पन बुते
आस केकर

४३८
दू पाया भेलौं
चौ पायासँ अखने
से बुझाइए

४३९

भीखो भेटै छै
ओकाइत देख क
समय संगे

४४०

हम्मर मुँह
हाथके दोस्ती खत्म
पाइ नै छै ने

४४१

सुगर बीपी
गरीबकेँ नै है छै
भूखक आगू

४४२

गाम आबि क
शहरक कुकुर
भुकै बड़ छै

४४३

पानि जान दै
पानिमे डूबि गेने
पानि जान लै

४४४

दोष पानिक
सदिखन नै रहै
हेलब सिखू

४४५
दूमुँहा लोक
मने साँपक गुरु
बँचि क रहु

४४६
कियो दोस्त नै
सत्य बजै बलाके
कलियुगमे

४४७
झूठक राज
लगै रमणगर
क्षणिक लेल

४४८
भूखल पेटे
बसिया भात नून
नीक लगै छै

४४९
दुख कतेक
सुखकेँ ताकैमे छै
जे संगे छल

४५०
अहाँ धनिक
गरीबो मनुखे छै
ई बुझि लिअ

४५१

सोना महग

मनुख सस्ता किए

भेल जाइ छै

४५२

सभ दिनसँ

एनाहिते भेलैए

सज्जन संगे

४५३

माहुर चिखि

दुनियामे हमहूँ

पेट भरलौं

४५४

बड़ भोगलौं

झुग्गी बस्तीक भोग

नरके बुझू

४५५

दर्शन केलौं

भोरका सूरुजक

प्रथमे बेर

४५६

हमरो मोन

कुंभ जाइकेँ छल

कर्मे बन्हेलौं

४५७
घर माँछ तँ
बाहरो माँछे माँछ
नीक जतरा

४५८
कपार तेज
तँ सुखलोमे धान
नै तँ जीयान

४५९
वनवासमे
सियाराम लखन
भागक खेल

४६०
कपार ठीक
पुरुषार्थ उपर
सभदिनसँ

४६१
भाग रामकेँ
वनवास देलक
कर्मेँ ईश्वर

४६२
स्वर्गक बाट
नै आसान रहलै
बिन मरने

४६३
सभ चलाक
अपनाकेँ बुझै छै
दोसराकेँ नै

४६४
चुरा अचार
बिन दही खाइ छै
बेबस लोक

४६५
पीठक पाछू
आइ तँ सभकियो
लूटब चाहै

४६६
गाछीमे फल
बाड़ीमे तरकारी
परिश्रमसँ

४६७
हमर काज
परिश्रम केनाइ
बिन चिंताकेँ

४६८
सूप कोनियाँ
घरसँ बिला गेलै
पैकेट एने

४६९

बहुत कम
ठोप कयल माथ
गामो घरमे

४७०

बताह नहि
भलमानुस जकाँ
हम चुप छी

४७१

टाकाक खेल
सभसँ अपनाकेँ
दूर क दै छै

४७२

बिनु इजोते
आन्हर बनि गेलै
लोक रातिमे

४७३

एसगरमे
भीतरक राक्षस
बाहर एलै

४७४

सोनाक मोल
बिकाइत छै झूठ
आदालतमे

४७५

रोपनी दौनी

खूब झूठक खेती

नीक लोकमे

४७६

जीवन नहि

बिन राक्षस दाँत

तोड़ने आब

४७७

जीवन युद्ध

अपने केने जीव

राम नै औता

४७८

गरमी जाड़

गरीबक आफत

धनीक मौज

४७९

मुरगा सस्ता

साग भेल महग

धरम कोना

४८०

आइ काल्हि तँ

मोल मनुखक नै

पाइ केर छै

४८१
बसबिट्टीमे
परल ओधि सन
हम बारल

४८२
नव टिकुला
नव गाछमे एलै
परिश्रमसँ

४८३
भूखल पेटे
मरुआ रोटी नून
बड़ निमन

४८४
दूधक दाँत
टूटबसँ पहिने
भेलौं गरीब

४८५
हमर राशि
रहतै सब दिन
गरीब किए

४८६
हम गरीब
मरबसँ पहिने
नहि रहबै

४८७

रूसल पिया

हराएल संपति

बड़ कचोटै

४८८

पहील नेना

बड़ सेहेंतगर

लगै सभके

४८९

नर्कक भोग

जनरलक यात्रा

रेलगाड़ीमे

४९०

कर्मक खेल

कीनब रेलमे की

एसी स्लीपर

४९१

एक्के रेलमे

स्वर्ग नर्क दुनू छै

दाम हिसाबे

४९२

पानिमे डुबा

बिस्कुट कोना खाइ

सिखा गेल ओ

४९३
कर्मक खेल
खेलाएत सभकेँ
आँखि नै मुनू

४९४
मास्टरजीक
सगरो चार बहै
बर्खाक राति

४९५
थाल कादोमे
सय साल जीलहुँ
आब की भेल

४९६
आँखिक पानि
शहरमे सभक
सुखा गेल छै

४९७
मोनक शांति
कतय हराएल
अर्थयुगमे

४९८
हम गरीब
मुदा मोन हमर
अनमोल छै

४९९

कोराक नेना

जिद्द पर अरल

रोटी चाहियै

५००

समय संगे

नहि चलि सकलौं

झूठक बिना

५०१

देशक काज

जँ हमहूँ अबितौं

बड़ भागसँ

५०२

आदिकालसँ

धर्म-अधर्म युद्ध

भ रहल छै

५०३

सटल रहे

बुड़िबक बुझि कँ

काबिल लोक

५०४

जे नै भागमे

ओहो कर्मे होयत

क' क' तँ देखू

५०५

सीता दाइसँ
जे हम सीखलहुँ
आइ यादि नै

५०६

झूठक धन
बैमानीक संपति
केकरा भेलै

५०७

आइ हृदय
पाथर सन भेलै
कते कठोर

५०८

पटुआ तीत
बारीक भय गेलै
दिल्ली कमेने

५०९

विकास संगे
कतय हरा गेलै
अपनापन

५१०

लोहाक भाव
जेना जेना बढ़लै
लोकक कम

५११
गरीबकेँ नै
बुझलकै मनुख
अमीर सभ

५१२
मोनक तार
कते छोट भ गेलै
मोबाइलसँ

५१३
नहि केकरो
ई हम्मर तोहर
सभ छै माया

५१४
पापीक पाप
ओकरे जड़बै छै
मानय की नै

५१५
समांग दूर
आकाश भेल लऽग
महानगरमे

५१६
बेंग साँपक
गरीब अमीरक
सेम संबंध

५१७
यम लगै छै
अनाथ निर्दोषकेँ
उज्जर कोट

५१८
बनल अछि
सब कठपुतली
मालिक लग

५१९
मोनक रस्ता
पेटसँ होइत छै
संगे आँखिसँ

५२०
घृणा होएब
कोनो कठिन नहि
आँखि पढ़ने

५२१
लोभ चलाकी
आँखिक पर्दापर
सब लिखल

५२२
कोमल चित
निर्दय वासनासँ
नित्य हारैत

५२३
बाहर बड्ड
गाजा बाजा तमाशा
भीतर सुन

५२४
समय संगे
बिसैर जाइत छै
लोक लोककेँ

५२५
आँखिक पानि
सभक सुखा गेलै
धनयुगमे

५२६
दर्दक धार
पार करैक अछि
तँ हँसब सिखू

५२७
तिला संक्रांति
तीर्थ डूबकी स्नान
तिलबा लाई

५२८
चुड़ा मुरही
तिलबा चुड़लाई
सब भेटत

५२९
तिल चाउर
बेटा पोता बहतै
बेटी किए नै

५३०
जीवन भरि
तिल बहले बेटी
बिन हिस्साकेँ

५३१
फुनगी चढ़ि
जे तोरल जिलेबी
ल गेल लालू

५३२
नवका अंगा
लऽ कऽ हमर बाबू
कहीया औता

५३३
अपना घर
पूरी किएक नहि
बनै छै माय

५३४
हम पैघ भऽ
खूब बेसी करबै
मायक सेवा

५३५

हमहूँ जेबै
अपन बाबू कोरा
शहीद भऽ कऽ

५३६

बिन बुझने
मानलौं पियक्कड़
अहूँ ओहने

५३७

चाह नहि यौ
हमरा दारू चाही
बुझबो करु

५३८

शराब संगे
चिखना भरपूर
होबाक चाही

५३९

ताड़ी दारूसँ
संबंध पक्का बुझू
आदिकालसँ

५४०

ताड़ीक निशा
रुपैयाक घमंड
दुनू आन्हरे

५४१

काया आ माया

धरतीपर चाही

सभकियोकेँ

५४२

बहुते नेता

जीतबसँ पहिने

चोर छलाह

५४३

आजुक नेता

बड़का डाकू भेला

जीतला बाद

५४४

गामक नेता

बिन पेंदीकेँ लोटा

काजक नहि

५४५

बौहक नाम

मोछपर द ताव

भोट मांगैत

५४६

ताड़ी बेच क

चमड़ी चमका क

नेता बनला

५४७

सुपक भांटा

दलबदलू नेता

एक्के रंगकेँ

५४८

दूर नेतासँ

नहि जनि कखन

पलैट जेए

५४९

हारल नेता

आ छोरल कनियाँ

बड्ड घिनाबै

५५०

देश विदेश

पप्पूक टर टर

अपने धुने

५५१

मनोरंजन

कम नहि होयत

चुनाव धरि

५५२

गिरगिटकेँ

रंग बदलनाइ

के सिखेलक

५५३
प्रेत देखलौं
नहि तँ कोनो नेता
देख लिअ ने

५५४
राजनीतिसँ
हम सिखलहुँ की
गूँह गिजब

५५५
कपट मोने
समाजमे सम्मान
उपकार नै

५५६
अप्पन लेल
नियम बदलै छै
आन चूल्हामे

५५७
मुँहक जोड़
धनक बलजोर
राज करै छै

५५८
उज्जर नहि
कोयला दलालीमे
कारी होयब

५५९
गरीब नेता
अमीर बनि गेलै
देखते कोना

५६०
यौ सरकार
गरीबोकेँ सुनबै
जीतला बाद

५६१
हमरे पिसू
भोट हमरे देल
लोकतंत्रमे

५६२
उपदेश नै
शिक्षा चाही हमरा
नेता देत नै

५६३
नेताक बेटा
नेते किए बनै छै
लोकतंत्रमे

५६४
नेता बनिते
सभ पाप धोबेलै
केहन न्याय

५६५

राजनीतिमे

नीति नै बाँकी सभ

भ रहल छै

५६६

पाँचे वर्षमे

बोलेरो कोना एलै

मुखिया जीक

५६७

सत्यक मोले

झूठ आसनपर

पसरल छै

५६८

जनता अछि

नेताक नजरिमे

बंसीक बोड़

५६९

बड़ बहाना

पाइ जाति तअरे

भोट बेचक

५७०

के अपन छै

सभ मौकाक यार

राजनीतिमे

५७१

लोकक हक
महान बनै लेल
घोंटि लेलकै

५७२

लाखो जीवन
देशक बँटवारा
खा क भूखल

५७३

नेताजी नहि
नेता बनि सकला
अछैते देश

५७४

ताकै छी हम
झूठक शहरमे
सत्यक बीया

५७५

घूरक गप्प
बूढ़क रूसनाइ
बुढ़िया फुसि

५७६

समय चक्र
बेटा सिखाबै बाप
वृद्धावस्थामे

५७७

बूढ़ भ गेने

अपनोकेँ आँखिमे

बोझ लगै छी

५७८

पेंशन एलै

बूढ़ीयालग नहि

पुतोहु लग

५७९

संगमे नाती

कृष्णाष्टमीक मेला

जेबी खाली

५८०

बूढ़क साँझ

नव नहि बुझत

भूख पियास

५८१

भीड़मे चुप्पी

मोबाइल टीपैत

आबक पीढ़ी

५८२

कात लागल

झड़ल पात सन

घरक बूढ़

५८३
प्राणक बोझ
उठा देहसँ आब
लचर भेलौं

५८४
हे भगवती
सहब असम्भव
जगह दिअ

५८५
फूल आ काँट
जेना जीवन मृत्यु
दुनू अटल

५८६
भूख आ मृत्यु
ई दूएटा बेमारी
बाँकी छलावा

५८७
हम मरब
ई बिसरि गेलहुँ
जीबइतमे

५८८
माटिक देह
तकर घमंड की
आगिमे जेतै

५८९

मृत्युए सत्य
बाँकी सब झूठक
संबंध अछि

५९०

अंतिम घड़ी
आँगनक माटिसँ
ठोप क देब

५९१

देहसँ प्राण
छनमे चलि गेल
बुझि नै पेलौं

५९२

डर नै दर्द
आँखि सब देखैत
निष्प्राण देह

५९३

लकड़ी संगे
बिन प्रिय संपत्ति
देह जरतै

५९४

जीवन भरि
जेकरा पोसलहुँ
देलक आगि

५९५
जरैत देह
धधकैत गाछीमे
घमंड संगे

५९६
अभाबे गेला
भोजक लिस्ट आइ
पैघ बनै छै

५९७
भोजमे सब
काठी बेर कियो नै
रमा हो राम

५९८
मुइलापर
हिस्सा लेबै खातिर
अप्पन एलै

५९९
अप्पन आन
सभ मतलबकेँ
धरतीपर

६००
जीबैत देह
मरल आत्मा संगे
लोक घुमैए

जगदानन्द झा 'मनु'

जन्म:	13 नवम्बर 1973
पिता:	स्वर्गीय राज कुमार झा
माता:	श्रीमती मंजू देवी
शिक्षा:	बिजनेसमे स्नातक, दिल्ली विश्वविद्यालयसँ। इलेक्ट्रानिक्स आ कम्पयूटर हार्डवेयरमे डिप्लोमा।
वृति:	प्रोफेसनल नेटवर्कर आ बिजनेस लीडर
पैतृक गाम:	हरिपुर डीहटोल, मधुबनी
वर्तमान निवास:	ग्रेटर नोएडा, दिल्ली एनसीआर
सम्पर्क:	+91 92124 61006, jagdanandjha@gmail.com

प्रकाशित कृति:

- ❑ चोनहा (बाल उपन्यास) 2012 इस्वीमे
- ❑ तोहर कतेक रंग (बीहनि कथा संग्रह), 2021 इस्वीमे
- ❑ नढ़िया भुकैए हमर घराड़ीपर (बहरयुक्त गजल संग्रह), 2022 इस्वीमे
- ❑ व्यथा (कविता आ गीत संग्रह) 2025 इस्वीमे
- ❑ आखर आँखि (हाइकू संग्रह) 2026 इस्वीमे
- ❑ जीवनदान (अनूदित कथा संग्रह) 2026 इस्वीमे

पल्लवी प्रकाशन
नेहरू मार्ग, तुलसी भवन, निर्मली,
जिला- सुपौल, बिहार: 847452

मूल्य- 299/-

ISBN: 978-93-48865-05-2